Course: M.A. II Semester

Course Code: GPS4007

Gandhian Philosophy of Education

UNIT- III

छात्र जीवन पर गाँधी जी के विचार

By:
Dr. Abhay Vikram Singh
Assistant Professor
Dept. of Gandhian and Peace Studies
Mahatma Gandhi Central University
Motihari (Bihar)

- महात्मा गांधी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक एवं अनुकरणीय हैं जितने अपने वक्त में थे। गांधीजी का बचपन, उनके सामाजिक एवं राजनीतिक विचार, सर्वोदय, सत्याग्रह, खादी, ग्रामोद्योग, महिला शिक्षा, अस्पृश्यता, स्वावलंबन एवं अन्य सामाजिक चेतना के विषय आज भी छात्रों के शोध एवं शिक्षण के प्रमुख क्षेत्र हैं।
- गांधी जी एक महान शिक्षाविद थे, उनका मानना था कि किसी देश की सामाजिक, नैतिक और आर्थिक प्रगति अंततः शिक्षा पर निर्भर करती है। गाँधी जी ने छात्रों के कर्तव्यों, उनके विचारों, उनके आचरण नैतिकता एवं व्यवहार को लेकर विस्तारपूर्वक व्याख्या की है।
- उनके अनुसार, छात्रों के लिये चरित्र निर्माण सबसे महत्त्वपूर्ण है और यह उचित शिक्षा के अभाव में संभव नहीं है।

छात्र जीवन के उद्देश्य

गांधीजी छात्रों को सामाजिक परिवर्तन का सबसे बड़ा औजार मानते थे। वे हमेशा चाहते थे कि सामाजिक परिवर्तनों, सामाजिक कुरीतियों, सती प्रथा, बाल विवाह, अस्पृश्यता, जाति व्यवस्था के उन्मूलन के विरुद्ध युवा आवाज उठाएं। उनका मानना था कि शोषणमुक्त, स्वावलंबी एवं परस्परपोषक समाज के निर्माण में युवा छात्रों की अहम भूमिका है एवं भविष्य में भी होगी। वर्तमान युवा प्रजातांत्रिक मूल्यों एवं तथ्यपरक सिद्धांतों को मानता है।

अतः गाँधी जी का मत था कि छात्र जीवन में ही व्यकित को सामाजिक परिवर्तन एवं राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देने के लिए पूरी तरह से तैयार किया जाए और ऐसा तभी संभव हो सकता है छात्रों और युवाओं के लिए स्वराज को सबसे बड़ा आत्मानुशासन, सत्याग्रह को सबसे बड़ा व्रत, अहिंसा को सबसे बड़ा अस्त्र एवं शिक्षा को सबसे बड़ी नैतिकता माना जाए।

- गांधीजी का मानना था कि समाज में शांति की स्थापना तभी संभव है, जब व्यक्ति भावनात्मक समानता एवं आत्मसंतोष को प्राप्त कर लेगा। गांधीजी के अनुसार शांति की प्राप्ति प्रत्येक युवा का भावनात्मक एवं क्रियात्मक लक्ष्य होना चाहिए तभी उसकी ऊर्जा, गतिशीलता एवं उत्साह राष्ट्रीय हित में समर्पित होंगे।

छात्र जीवन के सामाजिक कर्तव्य

- गाँधी जी के अनुसार छात्रों का यह परम कर्तव्य बनता है कि समाज के वंचित समूहों के उत्थान के लिए कार्य करें। आत्मप्रशंसा व अहंकार से दूर रहकर अन्याय तथा अत्याचार के खिलाफ आवाज़ उठाते रहे। गांधीजी हमेशा युवाओं से रचनात्मक सहयोग की अपेक्षा रखते थे।

- गांधीजी का तर्क था कि महान सामाजिक और नैतिक व्यवस्था केवल महान व्यक्तित्वों के कंधों पर ही तैयार की जा सकती है। अगर आपके दिल में कोई शुद्धता, निष्पक्षता और न्याय नहीं होगा तो ये गुण आपके घर में नहीं आ सकते। अगर ये गुण आपके घर में नहीं होंगे तो वे आपके समाज में भी नहीं होंगे। फिर देश में इन गुणों की अपेक्षा कैसे की जा सकती है? अतः यह अति आवश्यक है कि वर्तमान सन्दर्भों में विधार्थी अपने आप में उच्च आदर्शों से युक्त हो ताकि समाज कि प्रत्येक समस्या का सामना पूरे दृढ़संकल्पों के साथ कर सके।

- गांधी जी की शिक्षा अवधारणा को बुनियादी शिक्षा (Basic Education) के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने स्कूलों और कॉलेजों के पाठ्यक्रम में नैतिक और धार्मिक शिक्षा को शामिल करने पर बल दिया। गांधी जी ने शिक्षा की अवधारणा के निम्नलिखित उद्देश्य बताए:
- अच्छे चरित्र का निर्माण करना
- आदर्श नागरिक बनाना
- स्वावलंबी बनाना
- सर्वांगीण विकास करना

छात्रों के राष्ट्र के प्रति कर्तव्य

- अपनी मातृभाषा पर हमेशा गर्व करे।
- अपनी सभ्यता और संस्कृति के अनुसार आचरण करे।
- अपने राष्ट्र के विकास और समृद्धि को अपना परम लक्ष्य मान कर कार्य करे।
- अहिंसा और सत्य के मार्ग पर चलते हुए राष्ट्र सेवा में समर्पित रहे।
- जीवन में निजी स्वार्थों का तिरस्कार कर पूर्ण निष्ठा के साथ समाज और देश की सेवा करते रहना होगा।
- नैतिकता पूर्ण और संवेदनशील व्यक्तित्व बनकर मानवता की सेवा करने का पुरुषार्थ करते हुए राष्ट्र सेवा में समर्पित रहे।

गांधी जी के विचार ऐसे समय में और अधिक प्रासंगिक हैं जब लोग लालच, व्यापक हिंसा और भागदौड़ भरी जीवन-शैली के समाधान खोजने की कोशिश कर रहे हों। गांधी जी की अहिंसा और सत्याग्रह की अवधारणा की आज सबसे अधिक आवश्यकता है, क्योंकि आज व्यक्ति का सबसे बड़ा शत्रु स्वयं व्यक्ति ही है। यही वह समय है जब मात्र प्रतिशोध के नाम पर किसी की भी हत्या कर दी जाती है और अपने आलोचकों को दुश्मन से अधिक कुछ नहीं समझा जाता। संयुक्त राज्य अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग, दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला और अब म्याँमार में आंग सान सू की जैसे लोगों के नेतृत्व में दुनिया भर में कई उत्पीड़ित समाजों की दशा सुधारने और जागरूक करने की गांधीवादी तकनीक को सफलतापूर्वक नियोजित किया गया है, जो कि इस बात की गवाही देता है कि गांधी और उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं।